IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन का अध्ययन

शोध पर्यवेक्षक
प्रो. अषोक कुमार सिड़ाना
(डीन शिक्षा)
शिक्षा विभाग
अपेक्स विश्वविद्यालय जयपुर

शोधार्थी
माधुरी पंचोली

सार

शिक्षा को एक चरणबद्ध प्रक्रिया के रूप में वर्णित कर सकते हैं जो किसी व्यक्ति के ज्ञान कौशल और व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए बनाई गई है जो उसके लिए इस समाज में रहने के लिए आवश्यक है और उसे जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम भी बनाती है।इस अध्ययन का उद्देश्य उन छात्रों की पारिवारिक समायोजन का विश्लेषण करना है जो शैक्षिक दृष्टि से पीछे रह गए हैं। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया हैं कि कैसे परिवार के सदस्य उनके बीच का संवाद और पारिवारिक समायोजन पर प्रभाव डालते हैं। शोध हेतु स्वनिर्मित उपकरण बनाया गया तथा 400 का न्यादर्श लेकर विश्लेषण कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुएः– उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द :– की पारिवारिक समायोजन, उच्च माध्यमिक स्तर, विज्ञान वर्ग, अनुत्तीर्ण बालक।

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से शुरू होकर उसके मरने तक चलती है। वह जीवन भर सीखता रहता है। एक बच्चे की औपचारिक शिक्षा आम तौर पर चार या पांच साल की उम्र में शुरू होती है जब उसे स्कूल भेजा जाता है जहाँ उसे कौशल और दक्षताओं से संबंधित मार्गदर्शन दिया जाता है जो मानव संसाधन तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जैसा कि रूसो ने भी कहा है मनुष्य की शिक्षा उसके जन्म से शुरू होती है बोलने से पहले समझने से पहले उसे पहले से ही निर्देश दिया जाता है। अनुभव पूर्णता का अग्रदूत है। पूर्व में माध्यमिक विद्यालय स्तर तक की शिक्षा पूरी होने के बाद शिक्षा की प्रक्रिया पूरी मानी जाती थी लेकिन वर्तमान युग में सीखना बहुत छोटी उम्र से ही शुरू हो जाता है और सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है। इस प्रकार हम शिक्षा को एक चरणबद्ध प्रक्रिया के रूप में वर्णित कर सकते हैं जो किसी व्यक्ति के ज्ञान कौशल और व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए बनाई गई है जो उसके लिए इस समाज में रहने के लिए आवश्यक है और उसे जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम भी बनाती है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को उसकी क्षमताओं और अपने भीतर के आत्म को पहचानने में सक्षम बनाना है। यदि आज का छात्र पिछड़ जाता है तो यह देश और राष्ट्र के हित में बहुत बड़ी क्षति है। कमी सीखने में

रुचि की कमी पर्याप्त स्वाध्याय की आदतों की कमी अनुकूलन क्षमता की कमी निम्न व्यवहार परिवार की खराब सामाजिक और आर्थिक स्थिति छात्र और परिवार के बीच खराब संबंध कम बुद्धि आदि।

बच्चों की बौद्धिक क्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे कारकों में कई कारक विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आमतौर पर यह माना जाता है कि बुद्धि और उपलब्धि के बीच सीधा सकारात्मक संबंध है। साथ ही यह भी माना जाता है कि बौद्धिक स्तर में वृद्धि के साथ उसकी उपलब्धि का स्तर भी बढ़ता है। अक्सर यह भी माना जाता है कि बच्चा जितना अधिक बुद्धिमान होता है उसकी शैक्षणिक उपलब्धि उतनी ही अधिक होती है। लेकिन विभिन्न अध्ययनों और प्रयोगों से ज्ञात होता है कि शैक्षणिक उपलब्धि और बौद्धिक क्षमता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। कई बच्चे पर्याप्त बौद्धिक क्षमता होने के बावजूद या तो स्कूल के कार्यों में खराब प्रदर्शन करते हैं या पूरी तरह से असफल हो जाते हैं। तथा उनकी मानसिक और भावनात्मक स्थिति प्रभावित होने लगती है।

इस अध्ययन का उद्देश्य उन छात्रों की परिवारिक समायोजन का विश्लेषण करना है जो शैक्षिक दृष्टि से पीछे रह गए हैं। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया हैं कि कैसे परिवार के सदस्य उनके बीच का संवाद और पारिवारिक समायोजन पर प्रभाव डालते हैं। विशेष रूप से यह अध्ययन यह देखने की कोशिश करेगा कि परिवारिक समायोजन की कमी के कारण उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

1.2 प्रस्तुत शोध का औचित्य

प्रस्तुत षोध हायर सेकण्डरी अथवा उच्च माध्यमिक स्तर के साइंस/विज्ञान संकाय में अनुत्तीर्ण षिक्षार्थियों के पारिवारिक समायोजन और हीनभावना के बीच संबंधों की जांच करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। शोध का औचित्य निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है :–

- **विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता**
- **पारिवारिक समायोजन का महत्व**
- **शैक्षिक सुधार के लिए मार्गदर्शन**
- **माता–पिता और शिक्षक के सहयोग का महत्व**
- **.समाज में जागरूकता बढ़ाना**
- **शैक्षिक प्रणाली में सुधार के सुझाव**

इस शोध का उद्देश्य न केवल अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के अनुभवों को समझना है बल्कि उन्हें मानसिक और शैक्षिक रूप से पुनः सशक्त बनाने के लिए उपायों का सुझाव देना भी है। यह विद्यार्थियों माता–पिता शिक्षकों और शैक्षिक संस्थाओं के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शिका साबित हो सकता है।

1.3 सम्बन्धित साहित्य

यास्मीन रिजवाना और जैसवाल अलका (2025).ने कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं का पारिवारिक और सामाजिक समायोजन. पर बताया कि जैसा कि हम जानते हैं कि वर्तमान युग में महिला सशक्तिकरण एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। हमारा समाज बदल रहा है और यह महिलाओं की जीवन स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा है यही वजह है कि महिला धीरे–धीरे कमाने लगी है और आत्मनिर्भर बन रही है।

अब्दुल्ला तौकीर (2024) प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक संलग्नता के संबंध में पारिवारिक समायोजन–रेविजा ज़ा एलिमेंटार्नो इज़ोब्राज़ेवांजे। बच्चे के स्कूल दायित्वों के लिए पारिवारिक समायोजन महत्वपूर्ण है।

शर्मा आशुतोष (2024).शिक्षित और अशिक्षित ग्रामीण विवाहित महिलाओं के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय समाज में घर में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है लेकिन महिलाओं के लिए स्वतंत्रता की भावना और समाज में एक स्थान होना भी महत्वपूर्ण है।

येल्लैया (2012) ने हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर समायोजन के एक अध्ययन की जांच की और निष्कर्ष निकाला कि समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि पुरुष और महिला छात्रों सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों और ग्रामीण और शहरी स्कूल के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पैदा करते हैं।

अधिआम्बो ओडवार और मिल्ड्रेड (2011) ने केन्या के किसुमू जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच स्कूल समायोजन लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर एक अध्ययन किया और उनके परिणामों से पता चला कि स्कूल समायोजन में लड़कियों और लड़कों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

देवी (2011) ने व्यक्तित्व और उपलब्धि प्रेरणा के संबंध में छात्रों के समायोजन पर एक अध्ययन किया और पाया कि उपलब्धि प्रेरणा का समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

षोध अन्तराल :–पिछले विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि परिवार समायोजन एवं असफल विद्यार्थियों से सम्बन्धित बहुत कम शोध कार्य हुए है। इसमें भी उक्त तीनों चरों को लेकर साथ में किया गया षोध कार्य षोधकत्री के संज्ञान में नहीं आया है। अतः यह षोध के अन्तराल कोप्रदर्षित करता है तथा षोधकत्री के द्वारा चयनित षोध के चयन की सार्थकता को दर्षाता है।

1.4 शोध उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अनुतीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन का लिंग भेद के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अनुतीर्ण राजकीय विद्यालय एव निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तावित शोध में परिकल्पनाऐ दिशासूचक तथा शून्य परिकल्पनाएँ है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अनुतीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय में अनुतीर्ण राजकीय एव निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.6 षोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषिकरण

इस शोध में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों का परिभाषिकरण निम्नलिखित रूप में किया गया है:

1. **अनुत्तीर्ण विद्यार्थी:** वे विद्यार्थी जो उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 12) की विज्ञान संकाय की परीक्षा में निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त करने में असफल होते हैं और परिणामस्वरूप अगली कक्षा में प्रमोट नहीं हो पाते हैं।
2. **पारिवारिक समायोजन:** यह पारिवारिक सदस्यों के बीच आपसी संबंधों सहयोग समझ और सामंजस्य को दर्शाता है जो एक विद्यार्थी के मानसिक भावनात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है।
3. **उच्च माध्यमिक स्तर:** यह कक्षा 11 और 12 के अध्ययन को संदर्भित करता है जो आमतौर पर 16–18 वर्ष के छात्रों द्वारा किया जाता है और यह छात्रों को उनकी पसंद के विषयों (जैसे विज्ञान वाणिज्य कला) में गहन अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।
5. **विज्ञान संकाय:** यह उस शैक्षिक क्षेत्र को कहा जाता है जिसमें भौतिकी रसायन विज्ञान गणित जीवविज्ञान आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है।

1.7 वर्तमान शोध में प्रयुक्त विधि

शोध की प्रकृति सर्वेक्षण की मौलिकता व उपयोगिता के आधार पर शोधकर्त्ता द्वारा सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है।

1.8 शोध न्यादर्श

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श शोध हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालयों के **कुल 400 विद्यार्थियों को लिया गया।** राजकीय एवं निजी विद्यालयों के 200 – 200 बालक एवं बालिकाओं को लिया गया।

1.9 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा ड़ॉ. दीपिका सुवालका एवं ड़ॉ. वी.पी. अग्रवाल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत पारिवारिक समायोपन प्रमापनी का काम में लिया गया है।

110 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है :

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. टी. मूल्य

1.11 प्रदत्तों का विश्लेषण

1.11.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

सारणी संख्या 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय व निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमानमानक विचलन एवं टी–मान

पारिवारिक समायोजन	प्रबन्धन	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान
कुल पारिवारिक समायोजन	राजकीय	200	110ण्46	6ण्44	0.946
	निजी	200	109ण्89	5ण्58	

लेखाचित्र संख्या 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय व निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान

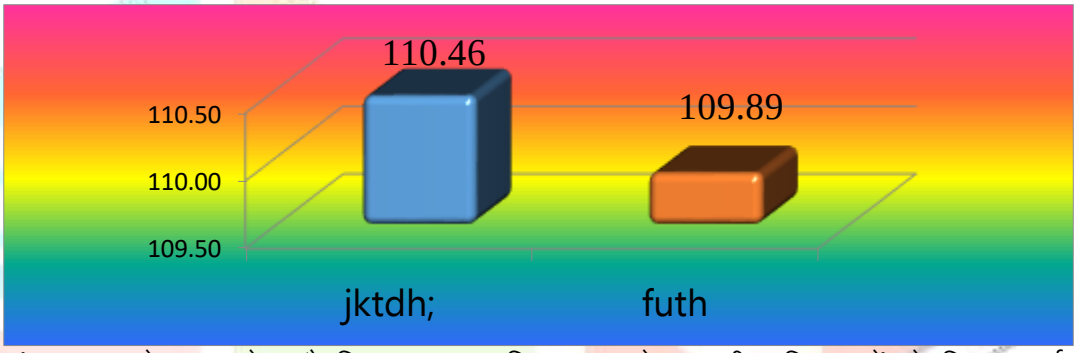

सारणी संख्या 1.1 से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के कुल पारिवारिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 110.46 एवं मानक विचलन 6.44 है जबकि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के कुल पारिवारिक समायोजन का मध्यमान 109.89 एवं मानक विचलन 5.58 है। राजकीय विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के कुल पारिवारिक समायोजन का मध्यमान उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के मध्यमान से आंषिक अधिक है। मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.28 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मानकीकृत मान 1.98 से कम है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की कुल पारिवारिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः शोध की परिकल्पना संख्या–1 उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.11.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं का पारिवारिक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

सारणी संख्या 1.2

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमानमानक विचलन एवं टी–मान

पारिवारिक समायोजन	लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान
कुल पारिवारिक समायोजन	बालक	200	109ण्94	6ण्15	0ण्796
	बालिकाएँ	200	110ण्42	5ण्90	

लेखाचित्र संख्या 1.2

उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के पारिवारिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान

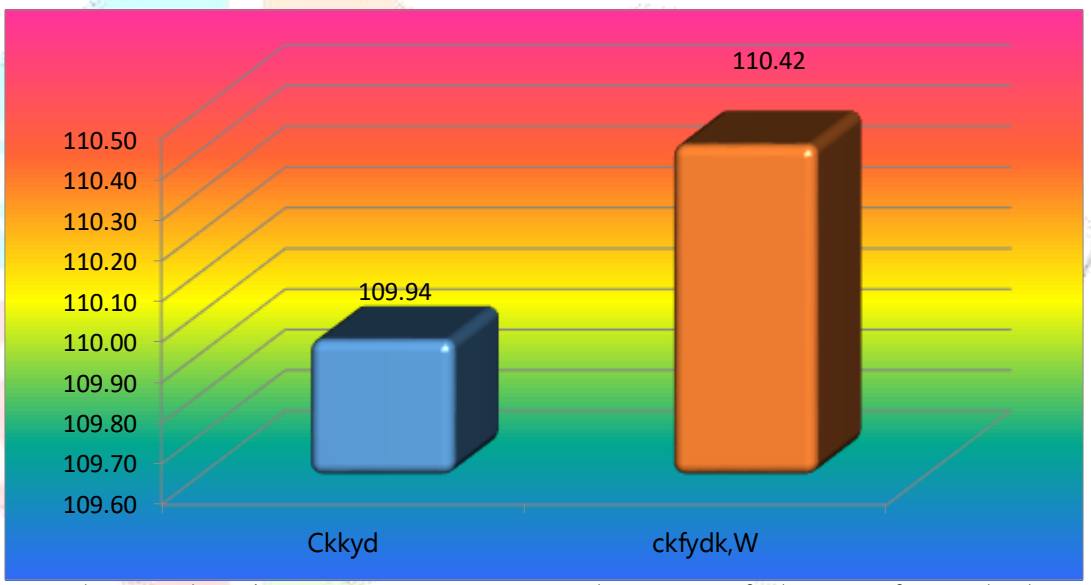

सारणी संख्या 1.2 से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालकों के कुल **पारिवारिक समायोजन** के प्राप्तांकों का मध्यमान 109.94 एवं मानक विचलन 6.15 है जबकि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग की अनुत्तीर्ण बालिकाओं के कुल **पारिवारिक समायोजन** का मध्यमान 110.42 एवं मानक विचलन 5.90 है। विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालिकाओं के कुल **पारिवारिक समायोजन** का मध्यमान उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालकों के मध्यमान से कुछ अधिक है। मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.796 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मानकीकृत मान 1.98 से कम है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के कुल **पारिवारिक समायोजन** में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः शोध की परिकल्पना संख्या–2 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के **पारिवारिक समायोजन** के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के **पारिवारिक समायोजन** में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12 शोध निष्कर्ष

1.12.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

I. राजकीय विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के कुल पारिवारिक समायोजन का मध्यमान उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के मध्यमान से आंषिक अधिक है।

II. शोध की परिकल्पना संख्या–1 उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.12.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं का पारिवारिक समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

I. विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालिकाओं के कुल **पारिवारिक समायोजन** का मध्यमान उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालकों के मध्यमान से कुछ अधिक है।

II. शोध की परिकल्पना संख्या–2 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के **पारिवारिक समायोजन** के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अनुत्तीर्ण बालक एवं बालिकाओं के **पारिवारिक समायोजन** में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. एडेनिनी वी (2011) पास होने के लिए पढ़ाई का स्टूडेंट्स पर असर. लागोस मैकमिलन।
2. अदिआम्बो डब्ल्यू. एम., ओडवार, ए. जे. और मिल्ड्रेड, ए. ए. (2011) किसुमू डिस्ट्रिक्ट केन्या में सेकेंडरी स्कूल के स्टूडेंट्स के बीच स्कूल एडजस्टमेंट, जेंडर और एकेडमिक अचीवमेंट के बीच संबंध। जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग ट्रेंड्स इन एजुकेशनल रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज़, 26, 493–497।
3. हार्प टी, रो ए (2009) इफेक्टिव स्टडी हैबिट्स। ूतइमपजेइसंमजजमत.बवउ से लिया गया। 12/3/2016.
4. वाइल्डर, एस. (2014) एकेडमिक अचीवमेंट पर माता–पिता के शामिल होने का असर –एक मेटा–सिंथेसिस। एडुक. रेव. 66, 377–397।
5. याओ एस.एन. कोर्टे (2002) 'टीचर्स के बीच हीनता की एक स्टडी", अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, जुलाई 1(1), पेज 315.
6. येल्लाया (2012) हाई स्कूल के स्टूडेंट्स की एकेडमिक अचीवमेंट पर एडजस्टमेंट की एक स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल फीमेल एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(5), 36–49